❍ 13 / 01 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *शांतिधाम को याद किया ?*

➢➢ *अपने श्रेष्ठ कर्म रुपी दर्पण द्वारा ब्रह्मा बाप के कर्म दिखलाए ?*

➢➢ *अंतर्मुखी एकांतवासी बनकर रहे ?*

➢➢ *अपने सत्य स्वरुप में स्थित रहे ?*

────────────────────────

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *कोई भी कार्य करते व पार्ट बजाते सागर समान ऊपर से भले हलचल दिखाई दे लेकिन अन्दर की स्थिति नथिंग न्यु की हो।* रचयिता और रचना के अन्त को जानने वाले त्रिकालदर्शी आराम से शान्ति की स्टेज पर ऐसे स्थित हो जाएं जो कोई भी कर्मेन्द्रियों की हलचल आन्तरिक स्टेज को हिला न सके।

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"अनेक बार के विजयी हैं - इस स्मृति द्वारा विघ्न विनाशक बनने वाली निश्चयबुद्धि आत्मा हूँ"*

〰✧ सदा अपने को बाप के समीप आत्मा समझते हो? समीप आत्माओंकी निशानी क्या होती है? सदा बाप के समान। *जो बाप के गुण वह बच्चों के गुण। जो बाप का कर्तव्य वह सदा बच्चों का कर्तव्य। हर संकल्प और कर्म में बाप समान, इसको कहते हैं समीप आत्मा। जो समीप स्थिति वाले हैं वे सदा विघ्न विनाशक होंगे।*

〰✧ *किसी भी प्रकार के विघ्न के वशीभूत नहीं होंगे। अगर विघ्न के वशीभूत हो गये तो विघ्न-विनाशक नहीं कह सकते। किसी भी प्रकार के विघ्न को पार करने वाला इसको कहा जाता है विघ्न विनाशक।* तो कभी किसी भी प्रकार के विघ्न को देखकर घबराते तो नहीं हो? क्या और कैसे का क्वेश्चन तो नहीं उठता है?

〰✧ *अनेक बार के विजयी हैं...यह स्मृति रहे तो विघ्न विनाशक हो जायेंगे। अनेक बार की हुई बात रिपीट कर रहे हो, ऐसे सहजयोगी। इस निश्चय में रहने वाली विघ्न विनाशक आत्मां स्वत: और सहजयोगी होंगी।*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ बापदादा ने पहले भी कहा है कि जैसे अभी यह पक्का हो गया है कि मैं ब्रह्माकुमारी/ब्रह्माकुमार हूँ चलते-फिरते - सोचते - हम ब्रह्माकुमारी हैं, हम ब्रह्माकुमार ब्राह्मण आत्मा हैं। ऐसे *अभी यह नेचुरल स्मृति और नेचर बनाओ कि 'मैं फरिश्ता हूँ।"*

〰✧ *अमृतवेले उठते ही यह पक्का करो कि मैं फरिश्ता परमात्म श्रीमत पर नीचे इस साकार तन में आया हूँ,* सभी को सन्देश देने के लिए वा श्रेष्ठ कर्म करने के लिए कार्य पूरा हुआ और अपने शान्ति की स्थिति में स्थित हो जाओ।

〰✧ ऊँची स्थिति में
चले जाओ। एक-दो को भी फरिश्ते स्वरूप में देखो। *आपकी वृत्ति दूसरे को भी धीरे-धीरे फरिश्ता बनादेगी। आपकी दृष्टि दूसरे पर भी प्रभाव डालेगी।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

—————————————————

ₒ° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

❂ *साइलेंस पॉवर प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

ₒ° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

~~✧ जो कहा वह किया। संकल्प और कर्म में अन्तर नहीं होता। क्योंकि *संकल्प भी जीवन का अनमोल खजाना है।* जैसे स्थुल खजाने को व्यर्थ नहीं करते हो वैसे शिव शक्तियाँ जिनकी मूर्त में दोनों गुण प्रत्यक्ष रूप में हैं उन्हों का एक भी संकल्प व्यर्थ नहीं होता। *एक एक संकल्प से स्वयं का और सर्व का कल्याण होता है।* एक सेकेण्ड में, एक संकल्प से भी कल्याण कर सकते हैं। इसलिए शक्तियों को कल्याणी कहते हैं।

~~✧ जैसे बापदादा कल्याणकारी है वैसे बच्चों का भी कल्याणकारी नाम प्रसिद्ध है। अब तो इतना हिसाब देखना पड़े। *हमारे कितने सेकेण्ड में, कितने संकल्प सफल हुए, कितने असफल हुए।* जैसे आजकल साइंस ने बहुत उन्नति की है जो एक स्थान पर बैठे हुए अपने अखों द्वारा एक सेकेण्ड में विनाश कर सकते हैं। तो क्या शक्तियों का यह साइलेन्स बल कहाँ भी बैठे एक सेकेण्ड में काम नहीं कर सकता?

~~✧ कहाँ जाने की अथवा उन्हों को आने की भी आवश्यकता नहीं। *अपने शुद्ध संकल्पों द्वारा आत्माओं को खींचकर सामने लायेगा।* जाकर मेहनत करने की आवश्यकता नहीं। अब ऐसे भी प्रभाव देखेंगे। *जैसे साकार में कहते रहते थे कि ऐसा तीर लगाओ जो तीर सहित आप के सामने पक्षी आ जाये।* अब यह होगा अपनी विलपावर से।

ₒ° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

∫∫ 5 ∫∫ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

_____

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- काँटों के जंगल को दैवी फूलों का बग़ीचा बनाना"*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा अमृतवेले उठ मीठे बाबा से मिलने की तमन्ना में फ़रिश्ता बन उड़ चलती हूँ मधुबन बाबा की कुटिया में... मीठे बाबा अपनी मीठी मुस्कान से मेरा स्वागत करते हैं और अपनी मीठी दृष्टि से मुझे निहाल करते हैं...* बाबा की दृष्टि से मुझ आत्मा के सूक्ष्म विकार, पुराने स्वभाव-संस्कार दैवीय गुणों में परिवर्तित होने लगे हैं... मुझ आत्मा की काया दिव्यता से चमकने लगी है... *फिर प्यारे बाबा मुझे अपने साथ रूहानी सैर पर ले जाते हैं और तीनों कालों के दर्शन कराते हैं... फिर ज्ञान सागर बाबा मुझ पर ज्ञान की बरसात करते हैं...*

❉ *भारत को दैवी स्वराज्य बनाने में मददगार बन श्रेष्ठ प्रालब्ध बनाने की शिक्षा देते हुए प्यारे बाबा कहते हैं:-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... ईश्वर पिता आप बच्चों के सुखो के लिए हथेली पर स्वर्ग धरोहर लाया है... *स्वर्ग के फाउंडेशन में मददगार बन सदा का सुनहरा भाग्य बनाओ... ईश्वरीय राहो पर चलकर असीम खुशियो में मुस्कराओ...* श्रीमत के हाथो में हाथ देकर, सदा के सुखो में झूम जाओ..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा बेहद के सर्विस में जुटकर बाबा की राईट हैण्ड बन विश्व का कल्याण करते हुए कहती हूँ:-* "हाँ मेरे प्यारे बाबा... मैं आत्मा आपकी यादो में उज्ज्वल भविष्य को पाती जा रही हूँ... *ईश्वर पिता की मदद कर, मीठा प्यारा भाग्य सजा रही हूँ... श्रीमत के साये में विकारो की कालिमा से महफूज होकर,सदा की निश्चिन्त हो गयी हूँ..."*

❊ *मेरे भाग्य के सितारे को आसमान की बुलंदियों पर पहुंचाते हुए मीठे बाबा कहते हैं:-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... ईश्वर पिता को खोज खोज कर थक से निकले थे कभी, आज उसकी मदद करने वाले खुबसूरत भाग्य के मालिक हो गए हो... *श्रेष्ठ भाग्य को लिखने की कलम पा गए हो... और अनन्त खुशियो को बाँहों में भरकर मुस्करा रहे हो... भगवान की मदद करने वाले महान हो गए हो..."*

➳ _ ➳ *मीठे बाबा के प्यार के फव्वारे में खुशियों की चरमसीमा पर पहुंचकर मैं आत्मा कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... मै आत्मा अपनी ही मदद को बेजार थी कभी... आपकी मदद को हर पल तरस रही थी... *आज आपका सारा प्यार आँचल में भरकर मुस्करा रही हूँ... मीठे बाबा भाग्य से युँ सम्मुख पाकर आपके प्यार में बावरी हो गयी हूँ... और असीम खुशियो में नाच रही हूँ..."*

❊ *काँटों के जंगल को फूलों का बगीचा बनाकर रूहानी फूलों का गुलदस्ता तैयार करते हुए प्यारे बाबा कहते हैं:-* "मेरे सिकीलधे मीठे बच्चे... ईश्वर पिता की श्रीमत पर चलकर जीवन को नये आयामो पर पहुँचाओ... मनुष्य मत ने कितना निस्तेज और बेहाल किया है... *अब श्रीमत के हाथो में पलकर फूलो सा खिलखिलाओ... दिव्य गुणो से सज संवर कर देवताई सौभाग्य को पाओ... सदा खुशियो में गुनगुनाओ..."*

➳ _ ➳ *करावनहार के हाथों को थाम श्रीमत के मार्ग पर चलते हुए मंजिल के समीप पहुंचती हुई मैं आत्मा कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... मै आत्मा अदनी सी, भगवान की कभी मददगार बनूंगी, ऐसा तो मीठे बाबा ख्वाबो में भी न सोचा था... *आज आपकी मदद का भाग्य पाकर, सतयुगी सुखो का हक पा रही हूँ... श्रीमत का हाथ और ईश्वरीय प्यार पाकर, अपना भाग्य शानदार बना रही हूँ..."*

|| 7 || योग अभ्यास (Marks:-10)

(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- श्रीमत पर भारत को पावन बनाने की सेवा करनी है*"

➳ _ ➳ जिस स्वर्णिम दुनिया की स्थापना करने के लिए भगवान इस धरा पर आये हैं वो दुनिया कितनी खूबसूरत होगी, *यह विचार करते - करते उस श्रेष्ठ भारत की तस्वीर आंखों के सामने उभर आती है जिसके लिए इतिहास में भी गायन है "जहाँ डाल डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा, वो भारत देश है मेरा"*। अपने आने वाले उसी श्रेष्ठ भारत की सुंदर तस्वीर को मन बुद्धि के दिव्य नेत्र से मैं देख रही हूँ, वो भारत जिसमे हर मनुष्य दैवी गुण धारी होगा। सुख, शान्ति, सम्पन्नता से भरपूर होगा। *लेकिन भारत को ऐसा बनाने का सपना तभी सच होगा जब ईश्वरीय मत पर चल, भारत को श्रेष्ठ और मानव मात्र को दैवी गुणधारी बनाने का श्रेष्ठ संकल्प हर ब्राह्मण बच्चे का होगा*।

➳ _ ➳ इन्ही श्रेष्ठ विचारों के साथ, श्रेष्ठ भारत का स्वप्न देखती मैं बाबा को वचन देती हूँ कि डायरेक्ट उनकी मत पर चल भारत को श्रेष्ठ और मानव मात्र को दैवी गुणधारी बनाने के उनके ईश्वरीय कार्य मे मैं तन - मन - धन हर प्रकार से सहयोगी अवश्य बनूँगी। *सबको परमात्म परिचय देने और उन्हें आप समान बनाने की नई - नई युक्तियाँ सोचते हुए, स्वयं को परमात्म बल से भरपूर करने के लिए अपने प्यारे प्रभू की याद में मैं बैठ, अपने मन और बुद्धि को अपने मस्तक के बीच भृकुटि पर एकाग्र कर, अपने प्वाइंट ऑफ लाइट स्वरूप में स्थित होती हूँ* और आत्म पँछी बन एक पल में ही देह रूपी वृक्ष की डाली को छोड़, एक ऊँची उड़ान भर कर, आत्म पंछियों की उस झिलमिलाती दुनिया में पहुंच जाती हूँ। जहाँ अनन्त परमात्म शक्तियाँ, अखुट खजाने हैं।

➳ _ ➳ परमपिता परमात्मा के इस दिव्य लोक में जहाँ परमात्मा रहते हैं इस दिव्य धाम में चारों ओर फैली अथाह शान्ति मन को एक ऐसी तृप्ति का अनुभव करवा रही है जैसे आत्मा को जो चाहिए था वो मिल गया हो। *वो कम्प्लीट सैटिस्फैक्शन पाकर मुझ आत्मा को अथाह सुकून की अनुभूति हो रही है। यह अनभति मझे सम्पर्णता की स्थिति में स्थित कर रही है*। अपनी

अनादि, सम्पूर्ण निरसंकल्प अवस्था में, एकटक अपने पिता परमात्मा को निहारते हुए मैं धीरे - धीरे उनके समीप जा रही हूँ। *अथाह शक्तियों के पुंज उस महाज्योति अपने पिता परमात्मा से निकल रही शक्तियां मुझे ऐसे दिखाई दे रही है जैसे किसी ऊँचे पहाड़ की चोटी से पानी का झरना अपने फुल फोर्स के साथ नीचे गिर रहा हो*।

➳ _ ➳ अपने शिव पिता से आ रही सर्वशक्तियों की रंग बिरंगी किरणो के अति सुंदर, मनमोहक झरने के नीचे आकर, अब मैं सर्वशक्तियों की शीतल फुहारों का आनन्द ले रही हूँ। *एक - एक किरण को निहारते, असीम आनन्द का अनुभव करते, इन रिम - झिम फ़ुहारों के झरने के नीचे स्नान करके मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरे ऊपर चढ़ी विकारों की मैल धीरे - धीरे उतर रही है और मेरा स्वरूप बहुत ही तेजोमय होता जा रहा है*। अपने इस अति तेजोमय स्वरूप को और अपने पिता परमात्मा के अनन्त प्रकाशमय स्वरूप को मैं मन्त्र मुग्ध होकर निहार रही हूँ और साथ - साथ परमात्म शक्तियों का बल स्वयं में भरकर शक्तिशाली भी बन रही हूँ।

➳ _ ➳ अपने पिता परमात्मा के साथ दिव्य मंगल मिलन मना कर और परमात्म बल स्वयं में भरकर अब मैं आत्मा परमात्म कर्तव्य में सहयोगी बन, उस कर्तव्य को पूरा करने के लिए वापिस साकारी दुनिया की ओर लौट आती हूँ। *अपने साकारी तन में मैं आत्मा आकर फिर से अपने अकाल तख्त पर बैठ जाती हूँ* और अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित होकर, भारत को श्रेष्ठ और मानव मात्र को दैवी गुणधारी बनाने की परमात्म सेवा में सहयोग देने के लिए मैं डायरेक्ट ईश्वर की मत पर चल कर, अपने संकल्प, बोल और कर्म को श्रेष्ठ और दिव्य बना कर सबको आप समान बनाने के पुरुषार्थ में लग जाती हूँ।

➳ _ ➳ *हर घर मंदिर बन जाये, और हर मानव देव बन जाये इसी शुभ - भावना और शुभ - कामना के साथ, अपने साकारी और आकारी दोनों स्वरूपो द्वारा, सबको परमात्म ज्ञान देकर मैं भारत को श्रेष्ठ और सबको दैवी गुणधारी बनाने की सेवा अब निरन्तर कर रही हूँ।

———————————————————

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं अपने श्रेष्ठ कर्म रूपी दर्पण द्वारा ब्रह्मा बाप के कर्म दिखलाने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं बाप समान आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा बाह्यमुखता को छोड़ सदैव अंतर्मुखी बन जाती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव एकान्तवासी बन जाती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदा अव्यक्त स्थिति का अनुभव करती हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *सदा समय अनुसार अपने मन, बुद्धि को स्वप्न तक भी सदा शुभ और शुद्ध रखो।* कई बच्चे रूहरूहान में कहते हैं - बापदादा तो शक्तियाँ देता है लेकिन समय पर शक्ति यज नहीं होती। *बापदादा विशेष सब बच्चों के

साथी होने के सम्बन्ध से विशेष ऐसे समय पर एक्सट्रा मदद देते हैं, क्यों? बाप जिम्मेवार है बच्चों को सम्पन्न बनाए साथ ले जाने के लिए।* तो बाप अपनी जिम्मेवारी विशेष ऐसे समय पर निभाते हैं लेकिन कभी-कभी बच्चों के मन की कैचिंग पावर का स्विच आफ होता है, तो बाप क्या करें? बाप तो फिर भी स्विच आन करने की, खोलने की कोशिश करते हैं लेकिन टाइम लग जाता है। इसलिए जब फिर स्विच आन हो जाता है तो कहते हैं - करना तो नहीं चाहिए था, लेकिन हो गया। *तो सदा अपने मन की कैचिंग पावर,जिसको आप कहते हैं टचिंग, उस टचिंग व कैचिंग पावर का स्विच आन रखो।* माया कोशिश करती है आफ करने की, सेकण्ड में आफ करके चली जाती है, इसीलिए जैसा समय नाजुक होता जायेगा, अभी होना है और। डरते तो नहीं हो ना?

✺ *ड्रिल :- "मन की कैचिंग पावर का स्विच आन रख परिस्थितियों के समय बापदादा की एक्सट्रा मदद का अनुभव"*

➳ _ ➳ *देख रहा हूँ मैं नन्हा फरिशता स्वयं को बापदादा के साथ हाथों में हाथ लिए सांयकाल में छत पर घूमते हुए...* मैं नन्हा फरिशता बड़े ही फलक से अपने बापदादा के साथ चल रहा हूँ... तभी बाबा मुझ फरिशते को गोद में उठा लेते है... और सामने झूले पर बिठा देते है... *और मुझ फरिशते को झूला झूला रहे है... तभी मुझ आत्मा के मन में एक प्रश्न रूपी लहर आती है... बापदादा तो शक्तियाँ देता है लेकिन समय पर शक्ति यूज नहीं होती...* बाबा बिना कहें ही मुझ आत्मा के मन की बात समझ जाते है... और मुझे सामने देखने का इशारा करते है...

➳ _ ➳ मैं फरिशता सामने देखता हूँ... *कुछ यात्री एक पहाड़ी रास्ते से अपनी मंजिल की ओर प्रभु महिमा के गीत गाते खुशी से आगे बढ़ रहे है...* सबके हाथ में एक मशीन है... जिस पर लिखा है *मन-बुद्धि... और इसी मशीन पर एक बटन है जिसमें लिखा है अॉन, अॉफ* रास्ता बहुत संकरा है... सभी यात्री आगे बढ़ रहे है... रास्ते के साथ-साथ ही कई तरह के रंग-बिरंगे खेल चल रहें है... कई तरह की चमकीली दिखने वाली वस्तुएँ रास्ते के साईड में है... *कुछ यात्री बीच-बीच में चलते हुए इन साइड में चल रहे सीन को देखने में व्यस्त हो जाती है साथ में चल रहे रंग-बिरंगे खेलों को देखने में लग जाते

है...*

➳ _ ➳ कुछ यात्री आगे बढ़ रहे है... *इसी बीच कुछ यात्री जो यहाँ वहाँ की साइड सीन में व्यस्त हो जाते है... उनके हाथ में जो मशीन है उसके बटन अॉफ हो जाता है...* और अचानक जिस रास्ते पर सभी यात्री चल रहे है उसमें ऊपर से बड़े-बड़े पत्थर आना शुरू हो जाते है... मैं आत्मा बड़े ध्यान से इस दृश्य को देख रही हूँ... तभी मैं आत्मा देखती हूँ... *ऊपर से बाबा सभी जो उस रास्ते पर चल रहे यात्री है... उनको सिगनल भेज रहे है... लेकिन कुछ यात्री जिनकी मन-बुद्धि रूपी मशीन अॉन है... वे उस सिगनल को कैच करते है... और हाई जम्प देकर उस पत्थर से आगे निकल जाते है...* लेकिन जिन यात्रियों की मशीन का बटन अॉफ था वो बाबा से मिल रहे सिगनल को कैच नहीं कर पा रहे है...

➳ _ ➳ तभी वो दृश्य मुझ आत्मा की आँखों के सामने से गायब हो जाता है... और बापदादा मुझ आत्मा के सामने आ जाते है... *बाबा मुझे दृष्टि दे रहे है... बाबा की दृष्टि से निकलती ज्ञान रूपी रोशनी मुझ आत्मा में समा रही है और इस दृश्य का राज मेरे सामने स्पष्ट होता जा रहा है...* बाबा मुझ आत्मा के सिर पर अपना वरदानी हाथ रखते है... बाबा के वरदानी हाथ से शक्तिशाली किरणें मुझ आत्मा में समा रही है... *मुझ आत्मा की बुद्धि दिव्य बनती जा रही है... मुझ आत्मा का मन रूपी दर्पण बिल्कुल स्वच्छ और शुद्ध बनता जा रहा है...* अब मैं आत्मा देख रही हूँ

➳ _ ➳ स्वयं को कर्म भूमि पर केवल एक बाबा की याद में भिन्न-भिन्न कर्म करते हुए... *मैं आत्मा देख रही हूँ... पत्थर रुपी कई तरह की परिस्थितियाँ मुझ आत्मा के जीवन में आ रही है लेकिन मुझ आत्मा की मन-बुद्धि की लाइन क्लियर होने के कारण मैं आत्मा सहज ही बाबा से मिली टचिंग को यूज कर रही हूँ... बापदादा की एकस्ट्रा मदद अनुभव कर रही हूँ...* और बडी सहजता से हाई जम्प देकर हर परिस्थिति रूपी पत्थर को पार कर रही हूँ... मैं आत्मा माया के रंग-बिरंगे खेल रूपी व्यर्थ से सदा मुक्त रह सदा स्वप्न तक भी अपनी मन-बुद्धि को शुद्ध और स्वच्छ रखती हूँ... और *निडर होकर समय रहते निर्विघ्न हो आगे बढ रही हूँ... और दसरों को भी निर्विघ्न

बना कर आगे बढा रही हूँ... शुक्रिया मीठे बाबा शुक्रिया*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔